Class → T.D.C. Part II

डॉ॰ पूनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर॰ एन॰ कॉलेज

Paper → IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(History of Western Philosophy)

Topic → सहज प्रत्ययों का खण्डन
(Refutation of Innate Ideas)

जन्मजात (सहज) प्रत्ययों का खण्डन
(Refutation of Innate Ideas)

जॉन लॉक अनुभववादी दार्शनिक हैं। उनके अनुसार हमारे मन में किसी ऐसे विचार की सत्ता नहीं होती जो जन्म से प्राप्त हो अर्थात् ज्ञान या कोई धारणा जन्मजात नहीं होती। जन्म के समय हमारा मन कोरे कागज या साफ स्लेट के समान रहता है जिस पर कुछ भी अंकित नहीं रहता। इसके विपरीत बुद्धिवादी दार्शनिक (जैसे- देकार्त, स्पिनोजा आदि) के अनुसार ज्ञान का मूल स्रोत बुद्धि है जिसमें अनेक जन्मजात प्रत्यय या विचार होते हैं। जैसे- ईश्वर, आत्मा, कारण-कार्य नियम, तादात्म्य नियम, धार्मिक एवं नैतिक मूल्य आदि। बुद्धिवादियों के द्वारा स्वीकृत इन जन्मजात या सहज (Innate) प्रत्ययों का खण्डन करना लॉक के लिए आवश्यक था, तभी वे अनुभववाद को स्थापित कर सकते थे। इसलिए प्रकृति द्वारा प्रदत्त इन जन्मजात प्रत्ययों

के खण्डन के लिए उन्होंने अनेक तर्क उपस्थित किये हैं। इसका उल्लेख उनकी प्रसिद्ध पुस्तक "An essay concerning human understanding" में किया गया है।

जॉन लॉक के द्वारा जन्मजात प्रत्ययों के विरुद्ध दिये गये तर्क इसप्रकार हैं —

(1) बुद्धिवादी दार्शनिकों के अनुसार ज्ञान का स्वरूप सार्वभौम एवं अनिवार्य होता है। ये ज्ञान जन्मजात होते हैं जो सभी देशों एवं कालों के लिए सत्य होते हैं। ऐसे ज्ञान को इन्द्रियानुभव के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। किन्तु लॉक का कहना है कि कोई भी सिद्धान्त ऐसा नहीं है जिसे सम्पूर्ण विश्व के लोग सार्वभौम रूप से स्वीकार करते हों। यदि विश्व के सभी लोग किसी एक विचार से सहमत हों, तो उसे सार्वभौम माना जा सकता है, किन्तु इससे यह विचार जन्मजात नहीं हो जाता। यह सम्भव है कि किसी अन्य काल में भी सभी लोग एकमत हों।

(2) लॉक ने तादात्म्य नियम (Law of Identity) तथा विरोध के नियम (Law of contradiction) — इन दो सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए कहा है कि बुद्धिवादी विचारक इसे ज्ञान का आधार मानते हुए जन्मजात विचार बतलाते हैं। लॉक का कहना है कि तादात्म्य नियम यह बतलाता है कि 'जो कुछ भी है, वह है' तथा विरोध के नियम से पता चलता है कि 'एक ही वस्तु का होना और नहीं होना असम्भव है'। बुद्धिवादियों के इस मत का खण्डन करते हुए लॉक ने कहा है कि कोई भी व्यक्ति बिना सीखे हुए इन नियमों को नहीं जान सकता। इसलिए इसे जन्मजात नहीं कहा जा सकता।

(3) सहज प्रत्यय यदि सार्वभौम एवं अनिवार्य होते हैं, तो

उसकी उपस्थिति सभी लोगों में होनी चाहिए। किन्तु मूर्खों, बच्चों एवं पागलों को इसप्रकार के सार्वभौम प्रत्यय का ज्ञान नहीं होता। इसका अर्थ है कि कोई भी प्रत्यय जन्मजात नहीं होते। कोई भी बच्चा जन्म से यह नहीं जानता है कि 6+3 = 9 होता है, बल्कि वह एक से नौ तक की गिनती सीखकर ही जानता है कि छह और तीन का योग नौ होता है। मूर्ख व्यक्ति यह भी नहीं जानता। इससे स्पष्ट है कि कोई भी प्रत्यय ऐसा नहीं है, जिसका ज्ञान सार्वभौम एवं अनिवार्य रूप से सभी व्यक्तियों को होता हो।

(4) सहज प्रत्यय के समर्थक नैतिक विचारों को जन्मजात मानते हैं। उनका कहना है कि कर्तव्य-अकर्तव्य का बोध, न्याय-अन्याय का ज्ञान आदि सभी देशों तथा सभी समाजों के लिए एकसमान है। किन्तु लॉक का कहना है कि कोई भी नैतिक नियम ऐसा नहीं है, जिसे सभी देश के लोग एक-समान रूप से स्वीकार करते हों। नैतिकता से जुड़े हुए नियम देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, जीव-हत्या नैतिक दृष्टि से हिंसा की श्रेणी में आता है। किन्तु कई स्थानों पर धार्मिक क्रियाओं में पशु-बलि देना पुण्य का कार्य है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि नैतिक नियम सार्वभौम एवं अनिवार्य नहीं हो सकते हैं। इसलिए जन्मजात रूप से नैतिकता का ज्ञान नहीं होता, बल्कि पारिवारिक एवं सामाजिक अनुभूति से इसका ज्ञान होता है।

(5) कुछ चिन्तकों ने ईश्वर-विचार को जन्मजात माना है। किन्तु इस मत का खण्डन करते हुए लॉक का कहना है कि विश्व में अनेक ऐसी जातियाँ हैं, जिन्हें ईश्वर का ज्ञान नहीं होता। विश्व की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा ईश्वर के अस्तित्व

को स्वीकार नहीं करता। इस आधार पर यह कैसे कहा जा सकता है कि ईश्वर - विचार सार्वभौम है। इसलिए ईश्वर के प्रत्यय को जन्मजात नहीं कहा जा सकता।

(6) कुछ विचारकों का कहना है कि जन्म से ही मस्तिष्क में जन्मजात प्रत्यय रहते हैं, किन्तु अचेतन रूप में। लॉक ने इसके विरुद्ध कहा है कि ऐसा विचार ही आत्मविरोधी है। यदि कोई सत्य आत्मा पर अंकित हो और यह कहा जाये कि उसका ज्ञान या बोध नहीं होता, तो यह विचार आत्मविरोधपूर्ण है। यदि प्रत्यय या विचार जन्मजात हैं, तो उसका बोध या ज्ञान अवश्य होना चाहिए। ऐसे आत्म-विरोधी विचार जन्मजात नहीं हो सकते।

(7) जन्मजात विचारों के समर्थन में कहा गया है कि ये विचार जन्म से ही मस्तिष्क में रहते हैं, किन्तु बुद्धि के विकसित होने पर उनकी पहचान होती है। किन्तु लॉक ने इन विचारों का खण्डन करते हुए कहा है कि जन्मजात विचार जन्म से ही प्राप्त नहीं होते हैं। विचार करने की शक्ति या क्षमता (Capacity) ही जन्म से प्राप्त होती है, स्वयं विचार जन्मजात नहीं होते। नवजात बच्चे का उदाहरण देते हुए कहा गया है कि उनमें भूख - प्यास, गर्मी - सर्दी आदि की अनुभूतियाँ जन्मजात होती हैं, परन्तु स्पष्ट रूप में कोई जन्मजात ज्ञान उनमें नहीं होता। इससे सिद्ध होता है कि यह ज्ञान जन्मजात नहीं है।

(8) लॉक ने कहा है कि सहज प्रत्यय की अवधारणा बुद्धिवादियों के द्वारा स्पष्ट रूप में व्यक्त नहीं की गयी है। यदि सार्वभौम होना तथा अनिवार्य रहना ही सहज प्रत्यय का मापदण्ड है, तो अनेक विचार सार्वभौम एवं अनिवार्य हैं, किन्तु उसे जन्मजात नहीं कहा जा सकता।

उदाहरण के लिए, सूर्य का उदय होना, चन्द्र का शीतल होना आदि सार्वभौम एवं अनिवार्य विचार हैं, किन्तु इसे जन्मजात नहीं कहा जा सकता। इसका ज्ञान हमें केवल अनुभव के द्वारा होता है।

इसप्रकार जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन कर लॉक ने यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि सभी प्रकार के ज्ञान का मुख्य आधार अनुभव है। सामान्य नियमों को बुद्धिवादी सहज विचार समझते हैं, किन्तु उसका ज्ञान भी अनुभव के द्वारा ही होता है। ये सामान्य नियम अनुभव के 'विशेष' तथ्य होते हैं। छोटे बच्चे तर्कशास्त्र के नियम नहीं जानते, किन्तु उन्हें इसका ज्ञान होता है कि बर्फ ठण्ढा है, आग में हाथ डालने पर जल जाएगा आदि। ये समस्त ज्ञान उन्हें अनुभव के द्वारा प्राप्त होते हैं। इसलिए इन्द्रियाँ ही हमारे ज्ञान की एकमात्र स्रोत हैं।

———X———X———